Shodh International: A Multidisciplinary International Journal (In Hindi)
Vol. 5, Issue 1 – 2020
ISSN: 2581-3501

मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में प्रतिरोध का स्वर: चाक और झूलानट के संदर्भ में

Dr. Liby Cherian[1]

Teacher, Department of Hindi, M.A. International School,

Kothamangalam, Ernakulam (Dist), Kerala -686691.

Correspondence E-mail Id: *editor@eurekajournals.com*

जकडी हुई नारी अपनी जंजीरों को तोडकर आगे बढ़ने की ताकत पाना उसकी अस्मिता का पहचान है। अस्मिताबोध से जानेवाली नारी की पहली बाधा परिवार की मानसिकता है जो वहाँ जीत होकर चलती है तो समाज की नज़र उसपर पडी है। ऐसे चलनेवाली विभिन्न मायनों से आयी हुई नारियों की लंबी कतार मैत्रेयी की रचनाओं में दृष्टव्य है। समसामयिक हिंदी महिला लेखिकाओं में मैत्रेयी पुष्पा का स्थान मौलिक है। भोगे हुए यथार्थ का सपाट बयान करनेवाले समकालीन सृजकों में मैत्रेयी की रचनाएँ अपने अनुभवों से निसृत है। उनमें अभिव्यक्त ज़िन्दगी के विभिन्न पहलुएँ य़थार्थ हैं बल्कि परंपरागत एवं रूढमूल विचारधारा के विरुद्ध होते हैं ।

जब हम पात्रों के साथ संगत करें तो उनका प्रतिरोधी स्वर उभर आएगा। विघ्नों पर फतहयाब बाँटनेवाले पात्रों का स्वर प्रतिरोध का है,आग्रसर की ताकत का है। कदर्थित परिवेशों से बचने की अस्मिता नारी की पहली सीढ़ी है। ऐसे पात्रों के मिसाल हैं चाक की रेशम ,सारंग और झूलानट की शीलो। वे शील पतिव्रत नहीं हैं। परंपरागत सिलसिले से हटकर चलनेवाली ये स्त्रियाँ कभी-कभी सामूहिक नीति के विरुद्ध खडी हैं। रेशम विधवा होने के नाते सति के विरुद्ध अडिग खडी है। दूसरे पुरुष से गर्भवति होने पर भी वह सामाजिक इज्जत के विरुद्ध भय के बिना कहती है-"बिरथ ही छानबीन करने में लगी हो"[1] उसकी निर्भीकता देखकर सास पूछती है- "तू लुगाई की जात होकर मर्दों जैसा हौंसला जुटा रही है"[2]।

समाज हमेशा परिवर्तनशील है।इस बदलाव में कभी-कभी किन्हीं का प्रतिरोधा स्वर ऊपर उठ आता है। आतरपुर गाँव के इतिहास में स्त्री कठपुतली है। इसलिए रुक्मणी रस्सी के फँदे में रामदोई कुए में,नारायणी कर्बन नदी में कुर्बान हो गयीं।चंदनी पति के द्वारा मौत का घाट उतार दी। अंत में रेशम को जेठ हत्या कर देता है। हत्यारों के विरुद्ध सारंग चुनौती दाकर

© Eureka Journals 2020. All Rights Reserved.

अडिग खडी है।क्योंकि गाँव के कई औरतें छल-कपट से मारी गयी। इस परिवेश से गाँव की मुक्ति है सारंग की इच्छा। इसके लिए वह परंपरा से हटकर चलने लगी। सारंग बचपन से साहसी थी। परंतु गृहस्थी में मग्न होकर वह अपना साहली व्यक्तित्व भूल गयी। वह स्वयं पूछती है- "मुझे क्या हो गया है मैं गदल गयी हूँ वह सारंग कहाँ गई जो गुरुकुल से अनुशासन भंग करने और लड़कियों को सिखाने के जुर्म में निकाली गई थी गृहस्थ ने कमज़ोर कर दिया है मुझे,जो सुरक्षा पर सुरक्षाढूँढती हूँ।'[3] सारंग पहले से ही पति को नाम लेकर बुलाना ग्रामीण स्त्रियों के संम्मुख हैरान की बात है। रेशम की हत्या से उसकी साहसी शख्सियत जागने लगी।

परिवार में फैसला लेना हमेशा पुरुषों का हक है।इस वर्चस्व के बीच कई स्त्रियों को चंगुल में फँसकर जीना पडता है। प्रस्तुत पन्यास के रंजीत पुत्र को शहर में पढ़ने केलिए भेजता है। इससे पत्नी सारंग सहमत नहीं है। समय के चाक में ढालकर सारंग बदलती है। आगे बढ़ने पर वह अपनी ज़िंदगी में कई फैसले स्वयं लेती है । पुत्र को शहर से वापस बुलाना, उसे गाँव के स्कूल में भर्ती कराना, नाटक का पांडुलिपि स्वयं लिखना, घायल हुए मास्टर को देखभाल करना और पति के इच्छा के विरुद्ध पंचायत चुनाव में उम्मीदवार होना आदि फैसले स्वयं लेती हैं। जो एक नयी संस्कृति बनने की संघर्ष का शुरुआत है। इसलिए समाज सारंग को हठी स्त्री मानती है। गाँव के आम लोगों केलिए कोर्ट-कचहरी की नीति न मिलती है। बडे लोग हमेशा पैसे देकर कानून -कायदे को अपने वश में ले आते हैं। इन सबके विरुद्ध खडी सारंग की ज़िंदगी बदनामियों को झेलकर नया रास्ता खोजती है।

मैत्रेयी की झूलानट उपन्यास में विधवा माँ,बडे बेटा सुमेर ओर झोटा बालकिशन के परिवार में शीलो बहू की भाँति पहुँचती है।सुमेर दारोगा है। उसका ब्याह बचपन में पिता की मृत्यु के पूर्व पिता द्वारा तय किया था। सुमेर मानसिक स्तर पर इस ब्याह के लिए तैयार नहीं। लेकिन कुल मर्यादा के नाम पर यह शादी संभव होती है। इसलिए सुमेर पत्नी कोगर में छोडकर शहर में दूसरी जनी के साथ रहने लगा। उपेक्षित शीलो का बछिया (ब्याह) देवर बालकिशन के साथ कराने का निर्णय सास ने लिया। दूसरे ब्याह का जो संस्कार उस समाज में फैली है, उसके विरुद्ध अडिग खडी होकर शीलो कहती है-"न बछिया-मछिया कुछ नहीं...."[4] ".....रीत रसम लिखा हुआ रुक्का तो नहीं होती।"[5] इस इनकार के बावजूद उसका दावा पत्नी के अधिकार का ही है। उसका तर्क अपनी जगह पर सही और अस्मिता संपन्न स्त्री के

© Eureka Journals 2020. All Rights Reserved.

आत्मविश्वास की अभिव्यक्ति है। शीलो खुलकर पूछती है- "अम्माजी सात-भँवरेअगिन साच्छी और बारातियों के आगे वचन भरकर संगी मुझे त्याग गया तो अछिया-बछिया का क्या विश्वास करूँ?"[6] दरअसल बछिया करने का सामाजिक दायित्व और नियम केवल स्त्रियों के कंधों पर है। पुरुष इससे मुक्त है। इसलिए शीलो का प्रश्न केवल परिवार की ओर नहीं अपितु सामाजिक मनोभाव की ओर से है- "ऐं काकीजी, पुलीसिया बेटा की बछिया की पाँत खा ली पूछ नहीं कि बरकट्टो (बालकटी) ब्याही है या रखैल बेटों के चलते रसम रीत भूलकर बहुओं की पीठों के लिए कोडे फिरती हो तुम बूढी जनी"[7] वास्तव में शीलो का स्वर रूढी हुई संस्कृति के विरुद्ध है। पति जायदाद का पिस्सा पूछकर आए तो शीलो खुलकर कहती है- "जमीन जायदाद की बात यह मामले तो अब भी हमारे तुम्हारे बाम ही है।"[8] वह समाज के संमुख आदर्श पतिव्रत नारी नहीं प्रतिरोध दिखानेवाली स्त्री है।

मैत्रेयी की ये रचनाओं में व्यवस्था के आगे संघर्ष करनेवाले पात्र उभर आते हैं। उनमें परिवर्तनगामी दृष्टिकोण दर्शनीय है। प्रतिरोध से यह परिवर्तन आ जाता है। उपन्यासकार के चारों ओर जो समाज था,उस समाज ने शिष्ट सभ्य संस्कार का मुखौटा धारण कर लिया है। इसलिए उनकी औपन्यासिक कथाएँ खोखले समाज के सभ्य मुखौटा का सपाट बयान है, जो सभ्य समाज के मानसिक धरातल के इच्छानुसार नहीं है। सकारात्मक परिवर्तन घर की चौखट लाँघने से नहीं,सामाजिक जकडनों को तोडने से संभव है क्योंकि स्वदेशी हुकुमत चला रहे हैं। इसलिए मानसिक धरातल पर बदलते हुए नए समाज केलिए मैत्रेयी के पात्रों के प्रतिरोधी स्वर गूँज रहा है।उनके पात्र साधारण नारी या मानव हैं। मानव, गुणों एवं दुर्गुणों से व्यवहार करता है। ये दोनों पक्ष पात्रों में दृष्टिगोचर है। अपना हक पहचानकर रिहाई के राह पर चलनेवाली ये पात्रों के प्रतिरोधी स्वरों के द्वारा मैत्रेयी पुष्पा मुक्ति चाहती है । यह मुक्ति पुरुष वर्चस्व से नहीं, संस्कारजनित अपनी रूढियों से, केवल स्त्रियों के लिए निर्धारित अलिखित सामाजिक नियमों से और परंपराओं से होना चाहिए।

सन्दर्भ

1. मैत्रेयी पुष्पा - चाक पृ. सं. -19.
2. मैत्रेयी पुष्पा - चाक पृ. सं. -19.
3. मैत्रेयी पुष्पा - चाक पृ. सं.- 22.

© Eureka Journals 2020. All Rights Reserved.

4. मैत्रेयी पुष्पा - झूलानट पृ.सं.- 74.
5. मैत्रेयी पुष्पा - झूलानट पृ.सं.- 75.
6. मैत्रेयी पुष्पा - झूलानट पृ.सं.- 114.
7. मैत्रेयी पुष्पा - झूलानट पृ.सं. -114.
8. मैत्रेयी पुष्पा - झूलानट पृ.सं. - 112.

© Eureka Journals 2020. All Rights Reserved.